श्रावण मास पर विशेष

श्रावण मास में शिवमहिम्नस्तोत्र से करें शिवपूजन!

भगवान् शिव के स्तोत्रों में 'शिवमहिम्नस्तोत्र' सर्वाधिक प्रचलित स्तोत्रों में से एक है। इस स्तोत्र की रचना गन्धर्वराज पुष्पदन्त द्वारा मानी जाती है। इसकी एक कथा प्रचलित है। गन्धर्वराज पुष्पदन्त भगवान् शिव के परम भक्त थे। वे राजा चित्ररथ (बंगाली परम्परा में राजा वाहु) की वाटिका से दिव्य पुष्प चुराकर भगवान् शिव की नित्य पूजा किया करते थे। चूँकि आकाशमार्ग से वाटिका में प्रवेश करने के कारण रक्षक उन्हें पकड़ नहीं पाते थे। तब राजा चित्ररथ ने वहाँ शिवनिर्माल्य (शिव पर चढ़ाए गए पुष्प–पत्रादि) यहाँ–वहाँ बिखेर दिए और जब पुष्पदन्त पुष्प चुराने वाटिका में आए, तो अनजाने में उन्होंने शिवनिर्माल्य पर पैर रखने का अपराध कर दिया, जिसके प्रभाव से उनकी दिव्य शक्ति समाप्त हो गई और उन्हें बन्दी बना लिया गया। बाद में पुष्पदन्त ने भगवान् शिव की भावपूर्ण स्तुति की, जिससे प्रसन्न होकर भगवान् शिव ने पुष्पदन्त के अपराध को क्षमा कर दिया और उन्हें दिव्य शक्तियाँ पुनः प्रदान कर दीं।

शिवमहिम्नस्तोत्र में 43 से 45 तक श्लोक मिलते हैं। उत्तर भारत, दक्षिण भारत एवं बंगाली संस्करणों में कुछ पाठ भेद भी हैं, परन्तु वर्तमान में सर्वाधिक प्रचलित पाठ गीताप्रेस, गोरखपुर का है, जिसमें फलश्रुति सहित 43 श्लोक हैं।

शिवमहिम्नस्तोत्र की फलश्रुति में कहा गया है कि इस स्तोत्र का नित्य पाठ करने वाले भक्त को इस लोक में पर्याप्त धन और आयु की प्राप्ति होती है। वह पुत्रवान् और यशस्वी होता है तथा मृत्यु के बाद शिवलोक को प्राप्त होता है। यह अमोघ स्तोत्र है। यानी अवश्य फल देने वाला स्तोत्र है। यह पवित्र है, अनुपम है, मनोहर है और मंगलमय है।

शिवमहिम्नस्तोत्र के पाठ करने की परम्परा रही है, परन्तु आधुनिक विद्वानों ने शिवमहिम्नस्तोत्र के विभिन्न काम्य प्रयोग भी वर्णित किए हैं। साथ ही, भगवान् शिव का षोडशोपचार पूजन इस स्तोत्र के माध्यम से किए जाने का उल्लेख डॉ. रुद्रदेव त्रिपाठी ने किया है, जिसमें विनियोग, ऋष्यादिन्यास, करन्यास, हृदयादिन्यास, ध्यान और पूजा विधान के साथ काम्य प्रयोग भी दिए हैं।

विनियोग: ॐ अस्य श्रीशिवमहिम्नः स्तोत्रस्य श्रीपुष्पदन्त ऋषिः, शिखरिण्यादिच्छन्दांसि, श्रीमदाशुतोष–शिवो देवता, हौं बीजम्, जूं शक्तिः, सः कीलकं मम श्रीसाम्बसदाशिवप्रीत्यर्थे अभीष्टसिद्ध्यर्थे च पाठे, अभिषेके विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास :

श्रीपुष्पदन्तर्षये नमः (शिरसि)।
शिखरिण्यादिच्छन्दोभ्यो नमः (मुखे)।
श्रीमदाशुतोषशिव–देवतायै नमः (हृदये)।
हौं बीजाय नमः (गुह्ये)।
जूं शक्तये नमः (पादयोः)।
सः कीलकाय नमः (नाभौ)।
विनियोगाय नमः (सर्वाङ्गे)।
करन्यास : अब करन्यास करें—

1

भवः शर्वो रुद्रः पशुपतिरथोग्रः सहमहां–
स्तथा भीमेशानाविति यदभिधानाष्टकमिदम्।
अमुष्मिन् प्रत्येकं प्रविचरति देव श्रुतिरपि
प्रियायास्मै धाम्ने प्रविहितनमस्योऽस्मि
भवते॥

अङ्गुष्ठाभ्यां नमः।

2

नमो नेदिष्ठाय प्रियदव दविष्ठाय च नमो
नमः क्षोदिष्ठाय स्मरहर महिष्ठाय च नमः।
नमो वर्षिष्ठाय त्रिनयन यविष्ठाय च नमो
नमः सर्वस्मै ते तदिदमिति शर्वाय च नमः॥

तर्जनीभ्यां नमः।

3

बहुलरजसे विश्वोत्पत्तौ भवाय नमो नमः
प्रबलतमसे तत्संहारे हराय नमो नमः।
जनसुखकृते सत्त्वोद्रिक्तौ मृडाय नमो नमः
प्रमहसि पदे निस्त्रैगुण्ये शिवाय नमो नमः॥

मध्यमाभ्यां नमः।

4

मनः प्रत्यक्चित्ते सविधमवधायात्तमरुतः
प्रहृष्यद्रोमाणः प्रमदसलिलोत्सङ्गितदृशः।
यदालोक्याह्लादं ह्रद इव निमज्यामृतमये
दधत्यन्तस्तत्त्वं किमपि यमिनस्तत् किल

भवान्॥

अनामिकाभ्यां नमः।

5

श्मशानेष्वाक्रीडा स्मरहर पिशाचाः सहचरा-
श्चिताभस्मालेपः स्त्रगपि नृकरोटीपरिकरः।
अमङ्गल्यं शीलं तव भवतु नामैवमखिलं
तथापि स्मर्तृणां वरद परमं मङ्गलमसि॥

कनिष्ठिकाभ्यां नमः।

6

हरिस्ते साहस्त्रं कमलबलिमाधाय पदयो-
र्यदेकोने तस्मिन् निजमुदहरन्नेत्रकमलम्।
गतो भक्त्युद्रेकः परिणतिमसौ चक्रवपुषा
त्रयाणां रक्षायै त्रिपुरहर जागर्ति जगताम्॥

करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

हृदयादिन्यास : करन्यास के पश्चात् हृदयादिन्यास करना चाहिए। हृदयादिन्यास में करन्यास के ही श्लोक–मन्त्र हैं। पुनरुक्ति दोष से बचने के लिए यहाँ उनका संकेत मात्र दिया गया है। पूरा श्लोक बोलकर ही हृदयादिन्यास करना चाहिए—

1. **भवः शर्वो रुद्रः**... ... हृदयाय नमः।
2. **नमो नेदिष्ठाय प्रियदव**... ... शिरसे स्वाहा।
3. **बहुलरजसे विश्वोत्पत्तौ**... ... शिखायै वषट्।
4. **मनः प्रत्यक्चित्ते**... ... कवचाय हुम्।
5. **श्मशानेष्वाक्रीडा**... ... नेत्रत्रयाय वौषट्।
6. **हरिस्ते साहस्त्रं**... ... अस्त्राय फट्।

ध्यान :अब अक्षत और बिल्वपत्र हाथ में पुष्प लेकर भगवान् शिव का ध्यान करना चाहिए—

ध्यायेन्नित्यं महेशं रजतगिरिनिभं
चारुचन्द्रावतंसं
रत्नाकल्पोज्ज्वलाङ्गं परशुमृगवराभीतिहस्तं
प्रसन्नम्।
पद्मासीनं समन्ततात् स्तुतममरगणैर्व्याघ्रकृत्तिं
वसानं
विश्वाद्यं विश्ववन्द्यं निखिलभयहरं
पञ्चवक्त्रं त्रिनेत्रम्॥

शिव पूजन

अब भगवान् शिव का विविध उपचारों के साथ मन्त्रों का उच्चारण करते हुए पूजन करना चाहिए—

पाद्य : निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए भगवान् शिव को पाद्य हेतु जल प्रदान करें—

त्वमर्कस्त्वं सोमस्त्वमसि पवनस्त्वं हुतवह-
स्त्वमापस्त्वं व्योम त्वमु धरणिरात्मा त्वमिति च।
परिच्छिन्नामेवं त्वयि परिणता बिभ्रतु गिरं
न विद्मस्तत्तत्त्वं वयमिह तु यत्त्वं न भवसि॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं हौं जूं सः पादयोः पाद्यं समर्पयामि।

अर्घ्य : अर्घ्य प्रदान करें—

त्रयी सांख्यं योगः पशुपतिमतं वैष्णवमिति
प्रभिन्ने प्रस्थाने परमिदमदः पथ्यमिति च।
रुचीनां वैचित्र्यादृजुकुटिलनानापथजुषां
नृणामेको गम्यस्त्वमसि पयसामर्णव इव॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं हौं जूं सः हस्तयोरर्घ्यं समर्पयामि।

आचमन : आचमन हेतु जल प्रदान करें—

भवः शर्वो रुद्रः पशुपतिरथोग्रः सहमहां-
स्तथा भीमेशानाविति यदभिधानाष्टकमिदम्।
अमुष्मिन् प्रत्येकं प्रविचरति देव श्रुतिरपि
प्रियायास्मै धाम्ने प्रविहितनमस्योऽस्मि
भवते॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं हौं जूं सः आचमनीयं जलं समर्पयामि।

स्नान : स्नान हेतु जल प्रदान करें—

नमो नेदिष्ठाय प्रियदव दविष्ठाय च नमो
नमः क्षोदिष्ठाय स्मरहर महिष्ठाय च नमः।
नमो वर्षिष्ठाय त्रिनयन यविष्ठाय च नमो
नमः सर्वस्मै ते तदिदमिति शर्वाय च नमः॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं हौं जूं सः स्नानीयं जलं समर्पयामि। स्नानान्ते आचमनीयं जलं च समर्पयामि। (आचमन हेतु जल प्रदान करें)

पयःस्नान : निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए भगवान् शिव को दूध से स्नान करवाएँ—

बहुलरजसे विश्वोत्पत्तौ भवाय नमो नमः
प्रबलतमसे तत्संहारे हराय नमो नमः।
जनसुखकृते सत्त्वोद्रिक्तौ मृडाय नमो नमः
प्रमहसि पदे निस्त्रैगुण्ये शिवाय नमो नमः॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं हौं जूं सः पयःस्नानं समर्पयामि।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं हौं जूं सः पयःस्नानान्ते शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि, शुद्धोदकस्नानान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि। (दुग्ध स्नान के उपरान्त जल से स्नान करवाएँ फिर आचमन हेतु जल प्रदान करें।)

दधिस्नान : अब भगवान् शिव को दही से स्नान करवाएँ। उसके उपरान्त जल से स्नान करवाकर आचमन हेतु जल प्रदान करें—

मनः प्रत्यक्चित्ते सविधमवधायात्तमरुतः
प्रहृष्यद्रोमाणः प्रमदसलिलोत्सङ्गितदृशः।
यदालोक्याह्लादं ह्रद इव निमज्यामृतमये
दधत्यन्तस्तत्त्वं किमपि यमिनस्तत् किल
भवान्॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं हौं जूं सः दधिस्नानं समर्पयामि। दधिस्नानान्ते शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि। शुद्धोदक स्नानान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि।

घृतस्नान : अब घी से स्नान करवाएँ और उसके उपरान्त शुद्ध जल से स्नान करवाकर आचमन करवाएँ—

श्मशानेष्वाक्रीडा स्मरहर पिशाचाः सहचरा-
श्चिताभस्मालेपः स्त्रगपि नृकरोटीपरिकरः।
अमङ्गल्यं शीलं तव भवतु नामैवमखिलं
तथापि स्मर्तृणां वरद परमं मङ्गलमसि॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं हौं जूं सः घृतस्नानं समर्पयामि। घृतस्नानान्ते शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि। शुद्धोदक स्नानान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि।

मधुस्नान : घृतस्नान के उपरान्त शहद से स्नान करवाएँ—

स्वलावण्याशंसाधृतधनुषमह्नाय तृणवत्
पुरः प्लुष्टं दृष्ट्वा पुरमथन पुष्पायुधमपि।
यदि स्त्रैणं देवी यमनिरतदेहार्धघटना-
दवैति त्वामद्धा बत वरद मुग्धा युवतयः॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं हौं जूं सः मधुस्नानं समर्पयामि। मधुस्नानान्ते शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि। शुद्धोदक स्नानान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि।

शर्करास्नान : मधुस्नान के पश्चात् शर्करास्नान होता है। शर्करास्नान के बाद शुद्ध जल से स्नान और आचमन हेतु जल प्रदान किया जाता है—

प्रजानाथं नाथ प्रसभमभिकं स्वां दुहितरं
गतं रोहिद्भूतां रिरमयिषुमृष्यस्य वपुषा।
धनुष्पाणेर्यातं दिवमपि सपत्राकृतममुं
त्रसन्तं तेऽद्यापि त्यजति न मृगव्याधरभसः॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं हौं जूं सः शर्करास्नानं समर्पयामि। शर्करास्नानान्ते शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि, शुद्धोदकस्नानान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि।

शुद्धोदक स्नान : पुनः शुद्ध जल से स्नान करवाएँ—

वियद्व्यापी तारागणगुणितफेनोद्गमरुचिः
प्रवाहो वारां यः पृषतलघुदृष्टः शिरसि ते।
जगद् द्वीपाकारं जलधिवलयं तेन कृतमि-
त्यनेनैवोन्नेयं धृतमहिम दिव्यं तव वपुः॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं हौं जूं सः पुनः शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि। शुद्धोदकस्नानान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि। (स्नान के उपरान्त आचमन हेतु जल प्रदान करें।)

वस्त्र : अब भगवान् शिव को वस्त्र समर्पित करें—

क्रतौ सुप्ते जाग्रत्त्वमसि फलयोगे क्रतुमतां
क्व कर्म प्रध्वस्तं फलति पुरुषाराधनमृते।
अतस्त्वां सम्प्रेक्ष्य क्रतुषु फलदानप्रतिभुवं
श्रुतौ श्रद्धां बद्ध्वा दृढपरिकरः कर्मसु जनः॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं हौं जूं सः वस्त्रं समर्पयामि। वस्त्रान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि। (वस्त्र समर्पित करने के बाद आचमन हेतु जल चढ़ाएँ।)

यज्ञोपवीत : वस्त्र के उपरान्त भगवान् शिव को यज्ञोपवीत अर्पित करें—

रथः क्षोणी यन्ता शतधृतिरगेन्द्रो धनुरथो
रथाङ्गे चन्द्रार्कौ रथचरणपाणिः शर इति।
दिधक्षोस्ते कोऽयं त्रिपुरतृणमाडम्बरविधि-
र्विधेयैः क्रीडन्त्यो न खलु परतन्त्राः
प्रभुधियः॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं हौं जूं सः यज्ञोपवीतं समर्पयामि। यज्ञोपवीतान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि।

(आचमन हेतु जल भी अर्पित करें।)

उपवस्त्र : यज्ञोपवीत के उपरान्त भगवान् शिव को उपवस्त्र अर्पित करें—

क्रियादक्षो दक्षः क्रतुपतिरधीशस्तनुभृता-
मृषीणामार्त्विज्यं शरणद सदस्याः सुरगणाः।
क्रतुभ्रेषस्त्वत्तः क्रतुफलविधानव्यसनिनो
ध्रुवं कर्तुः श्रद्धाविधुरमभिचाराय हि मखाः॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं हौं जूं सः उपवस्त्रं समर्पयामि। उपवस्त्रान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि। (आचमन हेतु जल भी अर्पित करें।)

गन्ध : अब भगवान् शिव को गन्ध यानी चन्दन उपलेपित करें—

यदृद्धिं सुत्राम्णो वरद परमोच्चैरपि सती-
मधश्चक्रे बाणः परिजनविधेयत्रिभुवनः।
न तच्चित्रं तस्मिन् वरिवसितरि त्वच्चरणयो-
र्न कस्याप्युन्नत्यै भवति शिरसस्त्वय्यवनतिः॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं हौं जूं सः गन्धं समर्पयामि।

अक्षत : चन्दन के उपरान्त भगवान् शिव को अक्षत अर्पित करें—

अकाण्डब्रह्माण्डक्षयचकितदेवासुरकृपा-
विधेयस्यासीद्यस्त्रिनयन विषं संहृतवतः।
स कल्माषः कण्ठे तव न कुरुते न श्रियमहो
विकारोऽपि श्लाघ्यो
भुवनभयभङ्गव्यसनिनः॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं हौं जूं सः अक्षतान् समर्पयामि।

भस्म : अब भगवान् शिव को भस्म अर्पित करें—

असिद्धार्था नैव क्वचिदपि सदेवासुरनरे
निवर्तन्ते नित्यं जगति जयिनो यस्य
विशिखाः।
स पश्यन्नीश त्वामितरसुरसाधारणमभूत्
स्मरः स्मर्तव्यात्मा नहि वशिषु पथ्यः
परिभवः॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं हौं जूं सः भस्म समर्पयामि।

पुष्प : अब भगवान् शिव को पुष्प और पुष्पमाला अर्पित करें—

हरिस्ते साहस्त्रं कमलबलिमाधाय पदयो-
र्यदेकोने तस्मिन् निजमुदहरन्नेत्रकमलम्।
गतो भक्त्युद्रेकः परिणतिमसौ चक्रवपुषा
त्रयाणां रक्षायै त्रिपुरहर जागर्ति जगताम्॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं हौं जूं सः पुष्पाणि पुष्पमालां च समर्पयामि।

बिल्वपत्र : अब शिवलिंग पर बिल्वपत्र अर्पित करें—

अयत्नादापाद्य त्रिभुवनमवैरव्यतिकरं
दशास्यो यद् बाहूनभृत रणकण्डूपरवशान्।
शिरःपद्मश्रेणीरचितचरणाम्भोरुहबलेः
स्थिरायास्त्वद्भक्तेस्त्रिपुरहर
विस्फूर्जितमिदम्॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं हौं जूं सः बिल्वपत्राणि समर्पयामि।

परिमल द्रव्य : अब भगवान् शिव को परिमल द्रव्य अर्पित करें—

तवैश्वर्यं यत्नाद् यदुपरि विरिञ्चो हरिरधः
परिच्छेत्तुं यातावनलमनलस्कन्धवपुषः।
ततो भक्तिश्रद्धाभरगुरुगृणद्भ्यां गिरिश यत्
स्वयं तस्थे ताभ्यां तव किमनुवृत्तिर्न फलति॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं हौं जूं सः परिमलद्रव्यं समर्पयामि।

सुगन्ध : भगवान् शिव को इत्र अर्पित करें—

तवैश्वर्यं यत्तज्जगदुदयरक्षाप्रलयकृत्
त्रयीवस्तुव्यस्तं तिसृषु गुणभिन्नासु तनुषु।
अभव्यानामस्मिन् वरद रमणीयामरमणीं
विहन्तुं व्याक्रोशीं विदधत इहैके जडधियः॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं हौं जूं सः सुगन्धिद्रव्यं समर्पयामि।

धूप : धूप से आरती करें—

तवैश्वर्यं यत्नाद् यदुपरि विरिञ्चो हरिरधः
परिच्छेत्तुं यातावनलमनलस्कन्धवपुषः।
ततो भक्तिश्रद्धाभरगुरुगृणद्भ्यां गिरिश यत्
स्वयं तस्थे ताभ्यां तव किमनुवृत्तिर्न फलति॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं हौं जूं सः धूपम् आघ्रापयामि।

दीप : भगवान् शिव के समक्ष दीपक दिखाएँ—

अमुष्य त्वत्सेवासमधिगतसारं भुजवनं
बलात् कैलासेऽपि त्वदधिवसतौ विक्रमयतः।
अलभ्या पातालेऽप्यलसचलिताङ्गुष्ठशिरसि
प्रतिष्ठा त्वय्यासीद् ध्रुवमुपचितो मुह्यति
खलः॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं हौं जूं सः दीपं दर्शयामि। (दीपक दिखाने के उपरान्त हाथ धोने चाहिए।)

नैवेद्य : नैवेद्य यानी प्रसाद चढ़ाएँ—

मही पादाघाताद् व्रजति सहसा संशयपदं
पदं विष्णोर्भ्राम्यद्भुजपरिघरुग्णग्रहगणम्।
मुहुर्द्यौर्दौःस्थ्यं यात्यनिभृतजटाताडिततटा
जगद्रक्षायै त्वं नटसि ननु वामैव विभुता॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं हौं जूं सः नैवेद्यं निवेदयामि। नैवेद्यान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि। (प्रसाद अर्पित करने के उपरान्त आचमन हेतु जल चढ़ाएँ।)

नीराजन : अब भगवान् शिव की कर्पूर से आरती करें—

नमो नेदिष्ठाय प्रियदव दविष्ठाय च नमो
नमः क्षोदिष्ठाय स्मरहर महिष्ठाय च नमः।
नमो वर्षिष्ठाय त्रिनयन यविष्ठाय च नमो
नमः सर्वस्मै ते तदिदमति शर्वाय च नमः॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं हौं जूं सः नीराजनं समर्पयामि। (आरती के बाद जल चढ़ाएँ।)

पुष्पांजलि : आरती करने के उपरान्त दोनों हाथों में पुष्प लेकर भगवान् शिव को पुष्पांजलि अर्पित करें—

कृशपरिणति चेतः क्लेशवश्यं क्व चेदं
क्व च तव गुणसीमोल्लङ्घिनी शाश्वदृद्धिः।
इति चकितममन्दीकृत्य मां भक्तिराधाद्
वरद चरणयोस्ते वाक्यपुष्पोपहारम्॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं हौं जूं सः पुष्पाञ्जलिं समर्पयामि।

क्षमा प्रार्थना : पुष्पांजलि करने के उपरान्त भगवान् शिव से हाथ जोड़कर क्षमा प्रार्थना करें—

असितगिरिसमं स्यात् कज्जलं सिन्धुपात्रे
सुरतरुवरशाखा लेखनी पत्रमुर्वी।
लिखति यदि गृहीत्वा शारदा सर्वकालं
तदपि तव गुणानामीश पारं न याति॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं हौं जूं सः क्षमाप्रार्थनां समर्पयामि।

प्रदक्षिणा : अन्त में भगवान् शिव की प्रदक्षिणा करें—

त्वमर्कस्त्वं सोमस्त्वमसि पवनस्त्वं हुतवह-
स्त्वमापस्त्वं व्योम त्वमु धरणिरात्मा त्वमिति
च।
परिच्छिन्नामेवं त्वयि परिणता बिभ्रतु गिरं
न विद्मस्तत्तत्त्वं वयमिह तु यत्त्वं न भवसि॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं हौं जूं सः प्रदक्षिणां समर्पयामि।

प्रदक्षिणा करने के उपरान्त भगवान् शिव को दण्डवत् प्रणाम करें। इस प्रकार पूजन समाप्त करके शिवमहिम्नस्तोत्र का पाठ करना चाहिए।

अन्य काम्य प्रयोग

जिस प्रकार विभिन्न कामनाओं की पूर्ति के लिए दुर्गासप्तशती के एक श्लोक को मन्त्र के रूप में जप करने का तथा सम्पुटित जप करने का विधान है, उसी प्रकार शिवमहिम्नस्तोत्र के श्लोक एवं सम्पुटित पाठ का भी प्रचलन है—

1. सर्वमनोकामना पूर्ति हेतु : ऐं ह्रीं श्रीं हौं जूं सः। मन्त्र से सम्पुटित करके महिम्नस्तोत्र का पाठ करें।

2. दाम्पत्य सुख प्राप्ति के लिए : ऐं ह्रीं श्रीं।। नमो नेदिष्ठाय प्रियदव दविष्ठाय च नमो नमः क्षोदिष्ठाय स्मरहर महिष्ठाय च नमः। नमो वर्षिष्ठाय त्रिनयन यविष्ठाय च नमो नमः सर्वस्मै ते तदिदमति शर्वाय च नमः॥ **श्रीं ह्रीं ऐं**।। मन्त्र का जप करें।

3. सन्तति सुख की प्राप्ति के लिए : ऐं ह्रीं श्रीं।। हरिस्ते साहस्त्रं कमलबलिमाधाय पदयोर्यदेकोने तस्मिन् निजमुदहरन्नेत्रकमलम्। गतो भक्त्युद्रेकः परिणतिमसौ चक्रवपुषा त्रयाणां रक्षायै त्रिपुरहर जागर्ति जगताम्॥ **श्रीं ह्रीं ऐं**।। मन्त्र का जप करें।

4. विजय प्राप्ति के लिए : श्रीं ह्रीं ॐ।। नमो नेदिष्ठाय प्रियदव दविष्ठाय च नमो नमः क्षोदिष्ठाय स्मरहर महिष्ठाय च नमः। नमो वर्षिष्ठाय त्रिनयन यविष्ठाय च नमो नमः सर्वस्मै ते तदिदमति शर्वाय च नमः॥ **ॐ ह्रीं श्रीं**।। मन्त्र का जप करें। •

सन्दर्भ : कल्याण (शिवोपासनांक)